



Hindi Urdu for Health

The Practice of Medicine in Hindi and Urdu

repositories.lib.utexas.edu/handle/2152/64261

Hindi Urdu Flagship | South Asia Institute | Department of Asian Studies | The University of Texas at Austin

Ethics & Culture

Ethics in medicine is not a new concern. But it has become much more pronounced in modern times. The issues involved may range from right diagnosis and right treatment to the fees charged to patients, and the administration of insurance and medical bills. This issue cuts across all genres of medicine, traditional as well as conventional. In this section we have video clips that inform us about how doctors following different medical systems talk about fees and ethics in their practice.

AYURVEDIC ETHICS AND DIAGNOSIS

Video URI: hdl.handle.net/2152/67981

Hindi Transcription

म्हारे पास तो जब आवैं हैं जी जब सारे नू कह दे हैं ना डॉक्टर, छिकले हैं, आकै भई इब किसी वैद्य ने टो ले जाओ, वो सारे लूट-लाट, लो कहोगे आप बुराई करै हैं, जब सारे खाल्ली हो ले हैं ना, जब करीब-करीब, जब कहैं हैं ना हम कती लुट-पिट लिये, ईब जा वैद्य संभालैगा तनै, जिब वैद्य के पास जा हैं... और के कहैं? क्यूं सस्ता ईलाज है ये... सस्ता इलाज है... और कई ऐसे भी आ जा हैं, कि वैद्य जी हमारे पास तो कुछ भी ना... ना है तो भई ले जा तू... हो जा तै दे दिये नहीं तो टाल मारिये हम तै... नू कह दे हैं तुम तै घास-फूस पाड़ लाओ हो... भई घास-फूस भी बहुत कीमती है... घास-फूस भी वैसे थोड़ा आवै है... तै जड़ी-बूटी है, लकड़ी है सारी जंगल की ही लकड़ी है... पर इनकी कीमत भी, देखो जी, बात ये है (खांसी) लागै जब राख की चुकटी लाग जा, ना लगै तै सोना फूक के खवा ले... लगै किस्मत की भी है... हैं जी... वैसे दवाई हैं जो देसी दवाई, हां, रोग के अनुसार, रोग की जांच होने के बाद में इलाज किया जाये तो वो शर्तिया होगा... अगर सब्जी में नमक की कमी है, नमक सै ही मिटैगी, घी से नहीं मिटै... हैं जी... रोग को पहचानना चाहिये... हमनै जरूत तो है नमक की और हम उसको सोना फूक कै खुवावैं हैं, ये गलत बात है... तो बात ये है जी कि पहले रोग और फिर जा कै, मेरे पिताजी कहा करते

(संस्कृत श्लोक)

पहले रोग को जांचो और फिर रोग की परीक्षा करो, मौसम की परीक्षा करो, आ कै भई इसकै गरमी है, गरमी की खाँसी है, खाँसी जैसे पांच किसम की लिक्खी है... अगर पित की खाँसी है, किसी ने कह दिया, यार इसके खाँसी है, ठंड की खाँसी है, सूट पीस कै चटा दो खाँसी ठीक हो जावैगी... होगी ठीक... अब उसनै सोच्ची, हां कै भई मैं तो खाँसी नुस्खा

जान गया... अब उसने पता चल गया कि मैं खाँसी की दवाई दूँ हूँ... किसी को थी पित की खाँसी, उसने भी सूट चटा दी... ओ तै दुगनी होगी... रोग की पहचान तो नहीं करी ना... तो बात ये है जी कि पहले रोग की परीक्षा करो, जब इलाज करो, जब इलाज होया करै है...

Hindi Vocabulary

Doctor	डॉक्टर
	छिकले
Physician	वैद्य
	टो ले जाओ
Will take care of it	संभालेगा; संभालेगा
Cheap treatment	सस्ता ईलाज; सस्ता इलाज
Grasses	घास-फूस
Expensive	कीमती
Herbs	जडी-बूटी
Wood from the jungle/forest	जंगल की ही लकड़ी
Cost	कीमत
Cough	खाँसी
Pinch of ash	राख की चुकटी
Burn gold and eat it	सोना फूक के खवा ले
Fate	किस्मत
Native medicine	देसी दवाई
Testing for disease	रोग की जांच
Cure, remedy, treatment	इलाज
	शर्तिया
Identifying a disease	रोग को पहचानना
	पहले रोग को जांचो
	फिर रोग की परीक्षा करो
	मौसम की परीक्षा करो
Cough of the summer season	गरमी की खाँसी
It is written, cough is of 5 kinds	खाँसी जैसे पांच किसम की लिखी है

Identifying a disease	रोग की पहचान
First test for the disease	पहले रोग की परीक्षा करो
When you treat	जब इलाज करो

Hindi Questions

वैद्य के पास मरीज़ कब आते हैं?

- 1 जब मरीज़ और सब दवाएँ ले लेते हैं और कोई फ़ायदा नहीं होता है
- 2 जब दवाओं पर बहुत पैसे खर्च कर लेते हैं
- 3 सब
- 4 जब सब किस्मत पर छोड़ देते हैं

वैद्य जी के अनुसार दवा कब फ़ायदा करती है?

- 1 जब रोग की जाँच ठीक तरह से हो
- 2 जब रोग की परीक्षा ठीक तरह से हो
- 3 सब
- 4 जब मौसम की परीक्षा हो